



NEWSLETTER

शनिवार, 27 जुलाई 2024 | वॉल्यूम - 108

Interview | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News



कपड़ा उद्योग में TCO का महत्व: विशेषज्ञ आनंद पोपट की राय



GOLD :68186
SILVER : 81371
CRUDE OIL : 6478

कपड़ा उद्योग में TCO का महत्व: विशेषज्ञ आनंद पोपट की राय



वस्त्र उद्योग एक महत्वपूर्ण और विशाल उद्योग है जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। वर्तमान परिदृश्य में कपड़ा उद्योग को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। कपास सीजन 23-24 स्पिनिंग मिल्स के लिए मुश्किलों भरा रहा है। कोटयार्न के मुख्य कार्यकारी श्री

आनंद पोपट, जो पिछले 35 सालों से कपास उद्योग से जुड़े हुए हैं, ने कपास सीजन की स्थिति और आगे की संभावनाओं पर चर्चा की।

कपास सीजन की वर्तमान स्थिति और चुनौतियाँ

आनंद पोपट के अनुसार, इस सीजन में यार्न की मांग में लगातार कमी और मार्जिन में गिरावट से स्पिनिंग मिल्स को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। जिनिंग फैक्ट्री के लिए यह वर्ष अच्छा रहा है, लेकिन अगर उन्होंने कपास का स्टॉक किया है और भाव नहीं बढ़ते, तो उनके लिए भी समस्याएं आ सकती हैं। इंटरनेशनल डिमांड कम होने से CCI को आने वाले सीजन में सक्रिय भूमिका निभानी पड़ेगी, जिससे स्पिनिंग मिल्स को भी प्रॉफिट मिलेगा।

TCO का इम्प्लीमेंट और इसके फायदे

आनंद पोपट का मानना है कि सरकार द्वारा TCO (Total Cost of Ownership) का इम्प्लीमेंट सही दिशा में एक कदम है। इससे जिनर्स अपनी गुणवत्ता और पैकेजिंग में सुधार करके बाजार में मांग बढ़ा सकते हैं। इससे बायर्स का जिनर्स पर ट्रस्ट बढ़ेगा और इंटरनेशनल मार्केट में भी कॉटन की डिमांड बढ़ेगी।

कपास व्यवसाय में TCO के फायदे

TCO का मतलब किसी उत्पाद या सेवा की समग्र लागत है, जिसमें प्रारंभिक खरीद मूल्य के साथ-साथ संचालन, रखरखाव, और अन्य संबंधित खर्च भी शामिल होते हैं। कपास व्यवसाय में TCO के निम्नलिखित प्रमुख फायदे हैं:

लंबी अवधि के वित्तीय लाभ:

लागत बचत : TCO विश्लेषण से कपास के उत्पादन, प्रसंस्करण, और विपणन में समग्र लागत को समझने में मदद मिलती है, जिससे लंबी अवधि में लागत बचत हो सकती है।

आर्थिक निर्णय : TCO का उपयोग करके, व्यवसायी सही समय पर सही निवेश कर सकते हैं, जिससे भविष्य की अप्रत्याशित लागतों से बचा जा सकता है।

बेहतर बजट प्रबंधन :

सटीक बजट : TCO के माध्यम से सभी संभावित खर्चों का पूर्वानुमान लगाना संभव होता है, जिससे बजट प्रबंधन अधिक सटीक और प्रभावी हो जाता है।

लागत नियंत्रण : TCO से खर्चों का विश्लेषण कर, अनावश्यक खर्चों को नियंत्रित किया जा सकता है।

उत्पादन और संचालन में सुधार:

प्रौद्योगिकी उन्नयन : TCO के माध्यम से पता चलता है कि किन तकनीकों में निवेश से लंबी अवधि में लाभ होगा, जिससे उत्पादन और संचालन में सुधार होता है।

प्रभावी संसाधन उपयोग : TCO से संसाधनों के प्रभावी उपयोग की पहचान होती है, जिससे उत्पादन प्रक्रिया में दक्षता आती है।

पर्यावरणीय और स्थिरता लाभ:

सस्टेनेबिलिटी : TCO विश्लेषण में पर्यावरणीय कारकों को शामिल करने से पर्यावरण-अनुकूल और स्थायी उत्पादन प्रक्रियाओं को अपनाया जा सकता है।

ग्रीन प्रैक्टिसेज : TCO से पता चलता है कि कौन सी प्रक्रियाएं पर्यावरण के लिए बेहतर हैं, जिससे ग्रीन प्रैक्टिसेज को प्रोत्साहन मिलता है।

प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त:

उच्च गुणवत्ता : TCO के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले कपास उत्पादन में निवेश किया जा सकता है, जिससे बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिलती है।

वैश्विक बाजार : TCO का विश्लेषण कर अंतर्राष्ट्रीय मानकों का पालन करना आसान होता है, जिससे वैश्विक बाजार में प्रवेश और सफलता की संभावना बढ़ जाती है।

ग्राहक संतोष:

उत्पाद की स्थिरता : TCO विश्लेषण से उत्पादन की गुणवत्ता में स्थिरता सुनिश्चित की जा सकती है, जिससे ग्राहकों का संतोष और वफादारी बढ़ती है।

बेहतर सेवा : कम TCO वाले समाधानों से बेहतर ग्राहक सेवा प्रदान की जा सकती है, जिससे ग्राहक संतुष्टि में वृद्धि होती है।

निष्कर्ष

कपास व्यवसाय में TCO का विश्लेषण विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है। यह न केवल वित्तीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि संचालन, पर्यावरण, और ग्राहक संतोष के दृष्टिकोण से भी फायदेमंद है। TCO का उपयोग करके, कपास व्यवसायी अपने उत्पादन और संचालन को अधिक प्रभावी, स्थायी, और प्रतिस्पर्धात्मक बना सकते हैं।

काँटन मार्केट की साप्ताहिक हलचल पर एक नजर

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77775

WEEKLY CHART 27.07.2024

ICE COTTON			
MONTH	19.07.24	26.07.24	WEEKLY CHANGE
DEC	70.70	67.99	-2.71
MAR'25	72.62	69.76	-2.86
MAY	74.10	71.13	-2.97
MCX (COTTON)			
JULY	56540	55300	-1240
NCDEX (KAPAS)			
APRIL	1611	1586	-25
NCDEX (COCUD KHAL)			
AUG	2945	2899	-46
SEPT	3073	3070	-3
SMART INFO SERVICE		CALL : 91119 77775	
CURRENCY (\$)			
INDIAN (Rupee)	83.66	83.73	0.07
PAK (Pakistani Rupee)	278.29	278.321	0.031
CNY (Chinese yuan)	7.26952	7.25014	-0.01938
BRAZIL (Real)	5.59942	5.65670	0.05728
AUSTRALIAN Dollar	1.49614	1.52742	0.03128
MALAYSIAN RINGGITS	4.68729	4.65609	-0.0312
COTLOOK "A" INDEX	82.20	79.30	-2.9
BRAZIL COTTON INDEX	72.14	69.82	-2.32
USDA SPOT RATE	62.30	58.39	-3.91
MCX SPOT RATE	57940	57200	-740
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	18000	17300	-700
GOLD (\$)	2402.80	2385.70	-17.1
SILVER (\$)	29.405	28.065	-1.34
CRUDE (\$)	78.60	76.44	-2.16

इस सप्ताह, इंटरनेशनल मार्केट में गिरावट वाला माहौल रहा।

इंटरकांटेनेंटल काँटन एक्सचेंज के भाव दिसंबर 2.71 सेंट तक गिरे, वही मार्च 2.86 एवं मई 2.97 सेंट तक गिरे।

भारतीय बाजार MCX पर काँटन के दाम में जुलाई माह के लिए 1240 रुपये की गिरावट देखी गई।

NCDEX पर कपास के भाव 25 रूपए प्रति 20 किलो तक गिरे, वहीं खल के भाव में अगस्त माह 46 रूपए, सितम्बर माह 3 रूपए प्रति क्विंटल तक गिरावट दर्ज की गई।

अन्य देशों के काँटन मार्केट पर नजर करें तो काँटलुक "ए" इंडेक्स में गिरावट देखी गई, USDA स्पॉट रेट 3.91 सेंट गिरा, MCX स्पॉट में 740 रूपए प्रति कैंडी भाव में गिरावट रही।

देश भर के प्रमुख कपास उत्पादक राज्यों में इस सप्ताह कपास की आवक

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91116 77771

STATE	22.07.24	23.07.24	24.07.24	25.07.24	26.07.24	27.07.24
PUNJAB	-	-	-	-	-	-
HARYANA	500	500	500	400	400	300
UPPER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
LOWER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
NORTH ZONE	500	500	500	400	400	300
GUJRAT	3,600	3,200	3,200	3,000	3,000	3,000
MADHYA PRADESH	200	-	-	-	-	-
MAHARASHTRA	500	5,000	5,000	4,000	5,000	4,500
CENTRAL ZONE	4,300	8,200	8,200	7,000	8,000	7,500
KARNATAKA	1,400	800	1,000	1,400	1,200	1,000
ANDHRA PRADESH	1,000	1,000	1,200	1,200	1,000	1,000
TELANGANA	500	300	200	200	200	200
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	2,900	2,100	2,400	2,800	2,400	2,200
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	7,700	10,800	11,100	10,200	10,800	10,000
ARRIVAL IN 170 Kg.						

red eco
FIBERS PVT.LTD.

+91 9879577099

sales@redcofibers.com

Our Group Cotton Yarn Count Range.
Knitting & Weaving.
Count- 20 to 34
Carded / Combed / Compact.

Murlidhar World Trade Pvt Ltd
Group of Companies

red eco
FIBERS PVT.LTD.

Angel
Fibers Limited

HARIPRIYA
SPINNING MILL PVT. LTD.

Rajkot, Gujarat (Bharat)

पिंक बॉलवर्म संकट ने उत्तर भारत में कपास की खेती को आधा कर दिया



उत्तर भारत में गुलाबी बॉलवर्म के संकट के कारण कपास की खेती रुकी हुई है

लगभग चार वर्षों से पिंक बॉलवर्म ने उत्तर भारतीय राज्यों पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में कपास की फसलों को तबाह कर दिया है। इस संक्रमण के कारण कपास की खेती में उल्लेखनीय कमी आई है, जो पिछले वर्ष लगभग 160,000 हेक्टेयर से घटकर इस वर्ष जुलाई के पहले सप्ताह तक केवल 100,000 हेक्टेयर रह गई है।

पिंक बॉलवर्म संक्रमण का पहली बार 2017 में पता चला

पिंक बॉलवर्म (PBW), जिसे किसानों के बीच गुलाबी सुंडी के नाम से भी जाना जाता है, कपास की फसलों को नुकसान पहुँचाता है, क्योंकि यह अपने लार्वा को कपास के बोलों में दबा देता है, जिसके परिणामस्वरूप लिनट कट जाता है और दाग लग जाता है, जिससे यह उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है। PBW के हमलों को रोकने के लिए प्रभावी तकनीकें मौजूद हैं, लेकिन किसानों द्वारा व्यापक रूप से अपनाई नहीं गई हैं।

यह कीट पहली बार उत्तर भारत में 2017-18 के मौसम के दौरान हरियाणा और पंजाब के चुनिंदा स्थानों पर दिखाई दिया, जिसने मुख्य रूप से बीटी कपास को प्रभावित किया। 2021 तक, इसने बठिंडा, मानसा और मुक्तसर सहित पंजाब के कई जिलों में महत्वपूर्ण नुकसान पहुँचाना शुरू कर दिया, जहाँ कपास उत्पादन के तहत लगभग 54% क्षेत्र में PBW संक्रमण की अलग-अलग डिग्री देखी गई। राजस्थान के आस-पास के इलाकों में भी उस अवधि के दौरान PBW संक्रमण की सूचना मिली।

उत्तर भारत में PBW का प्रसार और प्रभाव

2021 से, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में PBW के हमले सालाना बढ़ रहे हैं। पंजाब में, प्रभावित जिलों में बठिंडा, मानसा और मुक्तसर शामिल हैं। राजस्थान में, श्री गंगानगर और हनुमानगढ़ प्रभावित हैं, जबकि हरियाणा में, सिरसा, हिसार, जींद और फतेहाबाद प्रभावित हैं। इस साल बुवाई के दो महीने बाद, इन राज्यों में PBW संक्रमण की रिपोर्टें सामने आ रही हैं।

PBW प्रसार को नियंत्रित करने के तरीके: PBW हवा और खेतों में छोड़े गए संक्रमित फसल अवशेषों के माध्यम से फैलता है, संक्रमित कपास के बीज इसका दूसरा स्रोत हैं। विशेषज्ञ PBW का पता चलने पर कीटनाशकों का छिड़काव करने की सलाह देते हैं; बार-बार इस्तेमाल करने से संक्रमित बीजकोषों को बचाया जा सकता है। PBW वाले खेतों में कम से कम एक मौसम तक कपास नहीं बोना चाहिए और फसल अवशेषों को तुरंत जला देना चाहिए, ताकि स्वस्थ और अस्वस्थ बीजों का मिश्रण न हो।

निवारक उपाय: कपास के पौधे के तने पर सिंथेटिक फेरोमोन पेस्ट लगाने से नर कीटों को मादा कीटों को खोजने से रोका जा सकता है। इस पेस्ट को बुवाई के 45-50 दिन, 80 दिन और 110 दिन बाद प्रति एकड़ 350-400 पौधों पर लगाया जाना चाहिए। एक अन्य तकनीक, PBKnot Technology, नर कीटों को भ्रमित करने के लिए फेरोमोन डिस्पेंसर के साथ धागे की गांठों का उपयोग करती है और इन्हें कपास के पौधों पर तब बांधना चाहिए जब वे 45-50 दिन के हो जाएं।

अपनाने में चुनौतियाँ: अतिरिक्त लागत और तत्काल लाभ की कमी के कारण किसान नई तकनीकों और प्रौद्योगिकियों को अपनाने में हिचकिचाते हैं। इन निवारक तकनीकों के बारे में किसानों में जागरूकता और प्रशिक्षण की कमी है। गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम, जागरूकता अभियान, क्षेत्र प्रदर्शन, तथा सरकार और निजी क्षेत्र से वित्तीय सहायता इन तकनीकों को अधिक सुलभ बनाने में मदद कर सकती है।

समन्वित प्रयास आवश्यक: प्रभावी PBW प्रबंधन के लिए राज्यों के बीच समन्वित प्रयासों की आवश्यकता होती है। एक राज्य में खराब प्रबंधन संभावित रूप से पड़ोसी राज्यों में फसलों को नष्ट कर सकता है क्योंकि कीट हवा के माध्यम से यात्रा कर सकते हैं।

TOP 5

NEWS OF THE WEEK

- जलगांव में भारी बारिश से कपास की फसल को नुकसान**
भारी बारिश के कारण जलगांव के कई क्षेत्रों में फसल को भारी नुकसान हुआ है। ग्राम पंचायत अडावड में वडगांव रोड के किनारे भारी बारिश से नालियां फूट गईं और खेतों में बाढ़ आ गई, जिससे कपास की फसल और ट्रिप पाइप बह गए।
- भिवानी में औसत से कम बारिश, खरीफ की खेती पर संकट**
देश के कई राज्यों में बाढ़ की स्थिति है, लेकिन हरियाणा और विशेष रूप से भिवानी में इस बार औसत से भी कम बारिश हुई है। भिवानी जिले में अभी तक औसतन 40 एमएम बारिश भी दर्ज नहीं की गई है। इससे किसान बीजाई को लेकर चिंतित हैं और लोग उमस और गर्मी से परेशान हैं।
- टेक्सटाइल एसोसिएशन ने मध्य प्रदेश सरकार के साथ रणनीतिक साझेदारी की**
टेक्सटाइल उद्योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, तिरुपुर एक्सपोर्ट्स एसोसिएशन (टीईए), साउथर्न इंडिया मिल्स एसोसिएशन (एसआईएमए) और इंडियन कॉटन फेडरेशन (आईसीएफ) ने गुरुवार को मध्य प्रदेश सरकार के साथ एक समझौते को औपचारिक रूप दिया। यह रणनीतिक साझेदारी राज्य में एक्स्ट्रा लॉन्ग स्टेपल (ईएलएस) कॉटन की खेती को बढ़ावा देने पर केंद्रित है, जिसे इसकी बेहतरीन गुणवत्ता के लिए जाना जाता है।
- कपास बुआई क्षेत्र में 35 हजार हेक्टेयर की कमी**
शुष्क भूमि बेल्ट में प्रमुख फसल कपास का क्षेत्रफल इस साल 35 हजार हेक्टेयर कम हो गया है, पिछले साल की तुलना में। किसानों ने खुले बाजार में अपेक्षित मूल्य और मुनाफा न मिलने के कारण सोयाबीन बोने को प्राथमिकता दी है।
- भारत का कपड़ा क्षेत्र 28% बजट वृद्धि के साथ आगे बढ़ेगा: NITMA**
उत्तरी भारत कपड़ा मिल संघ (NITMA) के अध्यक्ष संजय गर्ग ने बुधवार को घोषणा की कि भारत का कपड़ा क्षेत्र 2024-25 के लिए इस क्षेत्र के लिए आवंटित बजट में 28 प्रतिशत की वृद्धि के साथ महत्वपूर्ण वृद्धि के लिए तैयार है।

इस सप्ताह, रुई बाजार में गिरावट वाला माहौल देखा गया

इस सप्ताह, रुई बाजार में गिरावट वाला माहौल देखा गया।

नार्थ झोन के पंजाब, हरियाणा और अपर राजस्थान में 100-150 रुपए प्रति मंड तक की गिरावट देखी गई।

सेंट्रल झोन के गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र में 500-1500 रुपए प्रति कैंडी की गिरावट रही।

साउथ झोन के ओडिशा, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना में 400-1000 रुपए प्रति कैंडी की गिरावट देखी गई।

STATE		22.07.2024		27.07.2024		CHANGE
STAPLE LENGTH		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,925	5,950	5,825	5,850	-100
HARYANA	27.5/28	5,825	5,825	5,725	5,725	-100
UPPER RAJASTHAN	28	5,675	5,975	5,525	5,825	-150
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	56,800	58,200	56,200	57,700	-500
MADHYA PRADESH	29	58,000	58,500	56,500	57,000	-1,500
MAHARASHTRA	29+ vid.	58,000	58,500	56,900	57,400	-1,100
SMART INFO SERVICES CALL : 91119 77775						
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	58,800	59,000	58,500	58,600	-400
KARNATAKA	29.5+	58,000	58,200	57,000	57,700	-500
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	58,700	59,000	57,900	58,000	-1,000
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	58,800	59,300	58,000	58,500	-800
NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.						
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy						



NEWSLETTER

Saturday, 27 July 2024 | Volume - 108

Interview | Cotton Weekly Physical chart | Share Market Update | Important News

TEXTILE STOCK MARKET UPDATE



Importance of TCO in Textile Industry: Opinion of Expert Anand Papat

IMPORT & EXPORT UPDATE



GOLD :68186
SILVER : 81371
CRUDE OIL : 6478

Importance of TCO in Textile Industry: Opinion of Expert Anand Papat

The textile industry is an important and huge industry that affects all aspects of human life. In the current scenario, the textile industry is facing many challenges. Cotton season 23-24 has been difficult for spinning mills. Mr. Anand Papat, Chief Executive of Cotyarn, who has been associated with the cotton industry for the last 35 years, discussed the situation of the cotton season and the future prospects.

Current situation and challenges of cotton season

According to Anand Papat, spinning mills are facing difficulties due to continuous decrease in demand for yarn and fall in margins this season.

This year has been good for ginning factories, but if they have stocked cotton and the prices do not rise, then they may also face problems. Due to low international demand, CCI will have to play an active role in the coming season, which will also give profit to the spinning mills.

Implementation of TCO and its benefits

Anand Papat believes that the implementation of TCO (Total Cost of Ownership) by the government is a step in the right direction. This will help ginners improve their quality and packaging and increase demand in the market. This will increase the trust of buyers on ginners and will also increase the demand for cotton in the international market.

Advantages of TCO in cotton business

TCO means the overall cost of a product or service, which includes the initial purchase price as well as operations, maintenance, and other related expenses. The following are the major advantages of TCO in cotton business:

Long-term financial benefits:

Cost savings: TCO analysis helps in understanding the overall cost in production, processing, and marketing of cotton, which can lead to cost savings in the long term.

Economic decisions: By using TCO, businessmen can make the right investment at the right time, thereby avoiding future unexpected costs.

Better Budget Management:

Accurate Budgeting: TCO makes it possible to forecast all potential expenses, making budget management more accurate and effective.

Cost Control: TCO helps to control unnecessary expenses by analyzing expenses.

Improvement in Production and Operations:

Technology Upgradation: TCO helps to identify which technologies will be beneficial to invest in in the long term, thereby improving production and operations.

Effective Resource Utilization: TCO helps to identify effective use of resources, thereby improving efficiency in the production process.

Environmental and Sustainability Benefits:

Sustainability: Including environmental factors in TCO analysis can lead to the adoption of eco-friendly and sustainable production processes.

Green Practices: TCO helps to identify which processes are better for the environment, thereby promoting green practices.

Competitive Edge:

High Quality: TCO helps to invest in high quality cotton production, thereby providing a competitive edge in the market.

Global Markets: Analyzing TCO makes it easier to comply with international standards, which increases the chances of entering and succeeding in global markets.

Customer Satisfaction:

Product Consistency: TCO analysis can ensure consistency in production quality, which increases customer satisfaction and loyalty.

Improved Service: Solutions with lower TCO can provide better customer service, which increases customer satisfaction.

Conclusion

Analyzing TCO in cotton business can provide significant benefits in a variety of areas. It is not only important from a financial perspective, but is also beneficial from an operational, environmental, and customer satisfaction perspective. By using TCO, cotton businessmen can make their production and operations more efficient, sustainable, and competitive.

A look at the weekly movement of the cotton market

SMART INFO SERVICES

CALL : 91119 77775

WEEKLY CHART 27.07.2024

ICE COTTON

MONTH	19.07.24	26.07.24	WEEKLY CHANGE
DEC	70.70	67.99	-2.71
MAR'25	72.62	69.76	-2.86
MAY	74.10	71.13	-2.97

MCX (COTTON)

JULY	56540	55300	-1240
------	-------	-------	-------

NCDEX (KAPAS)

APRIL	1611	1586	-25
-------	------	------	-----

NCDEX (COCUD KHAL)

AUG	2945	2899	-46
SEPT	3073	3070	-3

SMART INFO SERVICE CALL : 91119 77775

CURRENCY (\$)

INDIAN (Rupee)	83.66	83.73	0.07
PAK (Pakistani Rupee)	278.29	278.321	0.031
CNY (Chinese yuan)	7.26952	7.25014	-0.01938
BRAZIL (Real)	5.59942	5.65670	0.05728
AUSTRALIAN Dollar	1.49614	1.52742	0.03128
MALAYSIAN RINGGITS	4.68729	4.65609	-0.0312

COTLOOK "A" INDEX	82.20	79.30	-2.9
BRAZIL COTTON INDEX	72.14	69.82	-2.32
USDA SPOT RATE	62.30	58.39	-3.91
MCX SPOT RATE	57940	57200	-740
KCA SPOT RATE (PAKISTAN)	18000	17300	-700

GOLD (\$)	2402.80	2385.70	-17.1
SILVER (\$)	29.405	28.065	-1.34
CRUDE (\$)	78.60	76.44	-2.16

This week, the international market witnessed a decline.

Intercontinental Cotton Exchange prices fell to 2.71 cents in December, 2.86 cents in March and 2.97 cents in May.

Cotton prices on the Indian market MCX saw a decline of Rs 1240 for the month of July.

Cotton prices on NCDEX fell by Rs 25 per 20 kg, while the price of cake fell by Rs 46 in August and Rs 3 per quintal in September.

If we look at the cotton market of other countries, a decline was seen in the Cotlook "A" index, USDA spot rate fell by 3.91 cents, MCX spot prices fell by Rs 740 per candy.

Cotton arrival this week in major cotton producing states across the country

SMART INFO SERVICES

ALL INDIA COTTON WEEKLY ARRIVAL

CALL : 91116 77771

STATE	22.07.24	23.07.24	24.07.24	25.07.24	26.07.24	27.07.24
PUNJAB	-	-	-	-	-	-
HARYANA	500	500	500	400	400	300
UPPER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
LOWER RAJASTHAN	-	-	-	-	-	-
NORTH ZONE	500	500	500	400	400	300
GUJRAT	3,600	3,200	3,200	3,000	3,000	3,000
MADHYA PRADESH	200	-	-	-	-	-
MAHARASHTRA	500	5,000	5,000	4,000	5,000	4,500
CENTRAL ZONE	4,300	8,200	8,200	7,000	8,000	7,500
KARNATAKA	1,400	800	1,000	1,400	1,200	1,000
ANDHRA PRADESH	1,000	1,000	1,200	1,200	1,000	1,000
TELANGANA	500	300	200	200	200	200
TAMILNADU	-	-	-	-	-	-
SOUTH ZONE	2,900	2,100	2,400	2,800	2,400	2,200
ODISHA	-	-	-	-	-	-
TOTAL	7,700	10,800	11,100	10,200	10,800	10,000

ARRIVAL IN 170 Kg.



red eco®
FIBERS PVT.LTD.

+91 9879577099

sales@redecofibers.com

Our Group Cotton Yarn Count Range.
Knitting & Weaving.
Count- 20 to 34
Carded / Combed / Compact.

Murlidhar World Trade Pvt Ltd
Group of Companies



red eco®
FIBERS PVT.LTD.



Angel
Fibers Limited



HARIPRIYA
SPINNING MILL PVT. LTD.



Rajkot, Gujarat (Bharat)

Pink bollworm crisis halves cotton cultivation in north India



Cotton cultivation halted due to pink bollworm crisis in north India

For nearly four years, the pink bollworm has devastated cotton crops in the north Indian states of Punjab, Haryana and Rajasthan. The infestation has led to a significant reduction in cotton acreage, falling from about 160,000 hectares last year to just 100,000 hectares by the first week of July this year.

Pink bollworm infestation first detected in 2017

The pink bollworm (PBW), also known as the pink sundari among farmers, damages cotton crops as it burrows its larvae into the cotton bolls, resulting in the lint being cut and stained, making it unsuitable for use. Effective techniques to prevent PBW attacks exist but have not been widely adopted by farmers.

The pest first appeared in North India during the 2017-18 season in select locations in Haryana and Punjab, mainly affecting Bt cotton. By 2021, it started causing significant damage in several districts of Punjab, including Bathinda, Mansa and Muktsar, where about 54% of the area under cotton production showed varying degrees of PBW infestation. Adjacent areas of Rajasthan also reported PBW infestation during that period.

Prevalence and impact of PBW in North India

Since 2021, PBW attacks have been increasing yearly in Punjab, Haryana and Rajasthan. In Punjab, the affected districts include Bathinda, Mansa and Muktsar. In Rajasthan, Sri Ganganagar and Hanumangarh are affected, while in Haryana, Sirsa, Hisar, Jind and Fatehabad are affected. This year, after two months of sowing, reports of PBW infestation are emerging in these states.

Ways to control PBW spread: PBW spreads through wind and infected crop residues left in the fields, infected cotton seeds are another source. Experts recommend spraying insecticides when PBW is detected; repeated use can save the infected bolls. Cotton should not be sown in fields with PBW for at least one season and crop residues should be burned immediately, so that there is no mixing of healthy and unhealthy seeds.

Preventive measures: Applying synthetic pheromone paste on the stem of the cotton plant can prevent male pests from finding female pests. This paste should be applied to 350-400 plants per acre at 45-50 days, 80 days and 110 days after sowing. Another technology, PBKnot Technology, uses thread knots with pheromone dispensers to confuse male pests and these should be tied on cotton plants when they are 45-50 days old.

Challenges in adoption: Farmers are hesitant to adopt new techniques and technologies due to additional costs and lack of immediate benefits. There is a lack of awareness and training among farmers about these preventive techniques. Intensive training programmes, awareness campaigns, field demonstrations, and financial support from the government and private sector can help make these techniques more accessible.

Coordinated efforts required: Effective PBW management requires coordinated efforts among states. Poor management in one state can potentially destroy crops in neighbouring states as the pests can travel through the air.

TOP 5

NEWS OF THE WEEK

Heavy rains damage cotton crop in Jalgaon

Heavy rains have caused heavy crop damage in many areas of Jalgaon. Heavy rains burst drains along the Vadgaon road in Gram Panchayat Adavad and flooded the fields, washing away cotton crops and drip pipes.

Below average rain in Bhiwani, crisis on Kharif cultivation

There is a flood situation in many states of the country, but Haryana and especially Bhiwani have received less than average rainfall this time. Bhiwani district has not even recorded an average of 40 mm of rain so far. Due to this, farmers are worried about sowing and people are troubled by humidity and heat.

Textile associations enter into strategic partnership with Madhya Pradesh government

In a significant move aimed at boosting the textile industry, Tirupur Exporters Association (TEA), Southern India Mills Association (SIMA) and Indian Cotton Federation (ICF) on Thursday formalised an agreement with the Madhya Pradesh government. The strategic partnership focuses on promoting cultivation of Extra Long Staple (ELS) cotton in the state, which is known for its superior quality.

35 thousand hectares reduction in cotton sowing area

The area under cotton, a major crop in the dry land belt, has decreased by 35 thousand hectares this year, compared to last year. Farmers have preferred sowing soybean due to not getting the expected price and profits in the open market.

India's textile sector to grow with 28% budget hike: NITMA

Northern India Textile Mills Association (NITMA) President Sanjay Garg on Wednesday announced that India's textile sector is set for significant growth with a 28 per cent increase in the budget allocated for the sector for 2024-25.

This week, the cotton market witnessed a declining trend

This week, the cotton market witnessed a declining trend.

North Zone states of Punjab, Haryana and Upper Rajasthan witnessed a decline of Rs. 100-150 per candy.

Central Zone states of Gujarat, Madhya Pradesh, Maharashtra witnessed a decline of Rs. 500-1500 per candy.

South Zone states of Odisha, Karnataka, Andhra Pradesh, Telangana witnessed a decline of Rs. 400-1000 per candy.

STATE		22.07.2024		27.07.2024		CHANGE
STAPLE LENGTH		LOW	HIGH	LOW	HIGH	
NORTH ZONE						
PUNJAB	28.5	5,925	5,950	5,825	5,850	-100
HARYANA	27.5/28	5,825	5,825	5,725	5,725	-100
UPPER RAJASTHAN	28	5,675	5,975	5,525	5,825	-150
CENTRAL ZONE						
GUJARAT	29	56,800	58,200	56,200	57,700	-500
MADHYA PRADESH	29	58,000	58,500	56,500	57,000	-1,500
MAHARASHTRA	29+ vid.	58,000	58,500	56,900	57,400	-1,100
SOUTH ZONE						
ODISHA	29.5+	58,800	59,000	58,500	58,600	-400
KARNATAKA	29.5+	58,000	58,200	57,000	57,700	-500
ANDHRA PRADESH	29 mic 4+	58,700	59,000	57,900	58,000	-1,000
TELANGANA	29.5/30 mm 78-80 RD	58,800	59,300	58,000	58,500	-800

NOTE : There may be some changes in the rate depending on the quality.
Punjab, Haryana and Rajasthan rates in maund the rest in Candy